रामकुमार कृषक : जन्म, शिक्षा तथा व्यक्तित्व

-डॉ.जड़ा.उषा रानी
हिंदी प्राद्यापिका,
डी.एस शासकी महाविद्यालय,
ओंगोल, प्रकाशम् जिला|
आंध्रप्रदेश |

हिंदी के १९ वीं सदी के गीतकारों और गज़लकरों में रामकुमार कृषक का एक महत्वपूर्ण स्थान हैं | उन्होंने लग भग चुपचाप काव्य-साधना की है और साथ ही अपने लेखन को बहुत गंभीरता से लिया है | गीत और गज़ल उन्होंने लिखे ही नहीं,बल्कि उन्हें जिया भी है | यह कहना सार्थक होगा कि उन्हेंने अपने जिये हुए अनुभवों को काव्यात्मक अभिव्यक्ति दी है| बीसवी सदी के उत्तरार्ध की विडम्बनाओं , तकलीफों, मजबूरियों और उनसे उपजें असंतोष एवं आक्रोश को पूरी सांकेतिकता के साथ व्यक्त करना ही मानो उनकी रचनाओं का मुख्य लक्ष्य है| भाषा सीधी ,सहज और छन्दोबद्ध होती है|

जन्म: रामकुमार कृषक का ज्न्म १अक्तूबर १९४३को अमरोहा (मुरादाबाद जनपद,उत्तरप्रदेश) के निकट गुलड़िया नामक गॉव में हुआ |

शिक्षा: उनकी प्रारम्भिक शिक्षा अपने गावॅ और अमरोहा में हुई| जब वे हाईस्कूल के विद्यार्धी थे-स्कूल लायब्रेरी से प्रेमचन्द , वृन्दावनलाल वर्मा जैसे उपन्यासकरों की रचनावो का अध्ययन किया|

वास्तव में पढ़ाई की कमी को साहित्य से पूरा करने का उनका प्रयास स्कूल में ही शुरू हो गया था | कृषक ने अपने रचनात्मक जीवन कहानियों से प्रारम्भ किया और तखल्लुस केलिए कृषक शब्द का चयन किया | कारण, कृषक जी का परिवार खेती पर निर्भरता, दूसरी ओर उनके मन में प्रेमचंद का आदर्शों जड़ जमाया हुआ था |हाई स्कूल तक की पढ़ाई के बाद खेती बड़ी में भी जुटना कहा लेखिन खेती तोड़ी थी| काम के साथ साथ पडीए के सुरु किया अध्ययन करते हुऐ विशारद ,साहित्य रत्न और एम ए की उपाधियॉ प्राप्त की | इन परिस्थिथीयों को देखने से लागत है कि पढ़ाई से भी उन्हें जीव कोपार्जन में कोई विशेष मदद नहीं मिली |१९७७ में मित्रों के साथ मिलरकर छोटी सी प्रिंटिंग मशीन लगाई |बाद में राजकमल प्रकाशन में १४ साल संपदक के पद पर कार्य किया और किसी न किसी रूप से हिंदी प्रकाशन जगत से जुड़े हुऐ है |

व्यक्तित्व: उनका जीवन निरंतर संगर्ष रहा है और यही संगर्ष उनकी कविता का प्रेरणास्रोत भी है| इस संगर्ष में अगर वे टूटने से बचे है तो अपने गंबीर अध्यन -मनन के पलास्वरूप निर्मित वैच्यारिकथा, जीवन मूल्य, संस्कार, विचार इन सभी को उन्होंने अपने अनुभवों,अद्ययन और समाज से अर्जित किया है |शुरू में

महात्मा गाँधी,अरविंद और विवेकानंद की राचनों तथा बाद में मार्क्स लेनिन और क्रन्तिकारी वीर भगत सिन्ह के विचरों से वे बहुत प्रभावित हुऐ |

कृषक के अनुसार सन् १९६७ में नक्सल बड़ी आन्दोलन पर केन्द्रित सरदार पटेल की भूमिका के सहारे उन्होंने एक प्रबंध काव्य की रचना की |उनके अनुसार सन् १९६७ में नक्सल बड़ी किसान अन्धोलन के प्रभाव से हिंदी कविता में जो एक विचारधारात्मक परिवर्तन आया था |पुराने विचारों और संस्करों से नऐ विचारों और संस्कारों की निर्मित होती हैं | कृषक मानते है कि दु:ख सदा से कविता का साधन रहा है | यों तो मानव जीवन में सुख-दु:ख दोनों का संगम होता हैं, लेकिन आज दु:ख का स्थान उसमे अपेक्षाकृत ज्यादा है | कृषक जी के शब्दों में दु:ख है तो सृजन है, सृजन है तो सुख है |कृषक जी का बचपन गाँव में बीता और उन्होंने अपने भीतर के बचपन,अर्थात् ग्रामीण भोलेपन को अब तक अक्षुण्ण रखा हैं| अपने गँवई मन को शहरी चालाकियों से बचाये रखने के संघर्ष में भी उन्होंने बहुत-सी कविताओं की रचना की है |